

बिहार विभाजन के होने वाले आर्थिक कुप्रभाव का एक आर्थिक अध्ययन

Dr Lalit Mohan Singh

प्रधानाचार्य, स्वामी कृष्णानंद इण्टर कॉलेज जलाली, अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)

lalitmohansingh1586@gmail.com

मो 9458513450

सारांश, भारत ने 1991 के उदारीकरण के बाद से जबरदस्त विकास का अनुभव किया है। यद्यपि प्रति व्यक्ति आय पूरे देश के लिए लगभग सात गुना बढ़ गई है, अध्ययनों ने विभिन्न उप-राष्ट्रीय क्षेत्रों, जैसे राज्यों और जिलों में आय में महत्वपूर्ण विचलन पाया है। यह आय विचलन, और परिणामस्वरूप आय असमानता, समावेशी विकास नीतियों के लिए एक बढ़ती चुनौती पेश करती है। भारत में अभिसरण साहित्य का एक सर्वेक्षण निम्नलिखित प्रश्न उठाता है। क्या भारत में उप-क्षेत्रों में आय अभिसरण ऐतिहासिक और भौगोलिक कारकों से प्रभावित है, जो यह सुझाव देता है कि ये अंतर अंतर्निहित हैं, क्या नीतियाँ आय अभिसरण के पैटर्न को निर्धारित करने में भूमिका निभाती हैं, इस शोध पत्र में 15 नवंबर 2000 को होने बिहार राज्य के विभाजन के परिणामस्वरूप भारत में एक बहिर्जात नीतिगत झटके के प्रभाव का विश्लेषण करके दूसरे पक्ष को संबोधित करता है। इस शोध पत्र में आर्थिक गतिविधि के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में उच्च-रिजॉल्यूशन वाले नाइट-लाइट डेटा का उपयोग करते हैं ताकि यह जांच की जा सके कि नवगठित झारखंड राज्य की राज्य सीमाओं के पास के क्षेत्र, जो विभाजन से पहले बिहार के साथ एक भौगोलिक, ऐतिहासिक और नीतिगत निरंतरता साझा करते थे, विभाजन के बाद काफी अलग आर्थिक परिणाम प्रदर्शित करते हैं। हम पाते हैं कि 2000 के बाद बिहार की तुलना में झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में नाइट लाइट की तीव्रता वृद्धि दर 22% अधिक थी। इसका इस शोध पत्र में विस्तार के साथ उल्लेख किया गया है।

मुख्य शब्द, पूंजी बाजार, घरेलू बाजार, अभिसरण, भारत, आर्थिक विकास, पृथक्करण आदि।

प्रस्तावना. राज्य विभाजन अस्वीकरण यह शोधपत्र भारतीय आर्थिक सेवाओं (IES) के लिए परिवीक्षाधीन प्रशिक्षण के एक भाग के रूप में तैयार किया गया है। इस शोध पत्र की विषय-वस्तु लेखकों द्वारा अकादमिक या व्यावसायिक क्षमता में किए गए शोध और विश्लेषण पर आधारित है और इसका उद्देश्य केवल सूचनात्मक उद्देश्य है। इस शोध पत्र में व्यक्त किए गए विचार और राय लेखकों के अपने हैं और भारत सरकार की आधिकारिक स्थिति या नीति को नहीं दर्शाते हैं। क्या नीति ऐतिहासिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक निर्धारकों को पार करते हुए विभिन्न क्षेत्रों में आय अभिसरण प्रक्षेपवक्र को प्रभावित कर सकती है? यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि आय असमानताओं के आर्थिक परिणाम होते हैं जिनमें उत्पादकता में कमी, श्रम और पूंजी बाजारों और संसाधन आवंटन में अक्षमताएं और आर्थिक विकास शामिल हैं। कि असमानता के उच्च स्तर घरेलू

बाजार के विस्तार को सीमित कर सकते हैं, औद्योगीकरण को हतोत्साहित कर सकते हैं और आर्थिक विविधीकरण को बाधित कर सकते हैं, जिससे निरंतर विकास के लिए आवश्यक संरचनात्मक परिवर्तन धीमा हो सकता है। इसलिए असंतुलित विकास और आय विचलन को संबोधित करने के लिए नीतियों को डिजाइन करना दीर्घकालिक विकास को बनाए रखने की कुंजी है। आर्थिक परिणामों के अलावा, आय असमानताओं के सामाजिक और राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। गंभीर आय असमानताएं लोगों के बीच अशांति पैदा कर सकती हैं और देश में लोकतांत्रिक संस्था के कामकाज को खतरे में डाल सकती हैं। बिहार में, आय असमानताओं के अनुभवों ने लोगों को राज्य विभाजन की नीति की वकालत करने के लिए प्रेरित किया है। जबकि राजनीतिक और सांस्कृतिक कारक भी भूमिका निभाते हैं, विभाजन के लिए आर्थिक तर्क इस विश्वास में निहित है कि छोटी प्रशासनिक इकाइयाँ बेहतर शासन, बेहतर संसाधन आवंटन और उच्च क्षेत्रीय विकास की ओर ले जा सकती हैं, जिससे पिछड़े क्षेत्रों को “पकड़ने” का मौका मिलता है। इसके बाद, बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों को विभाजित करके क्रमशः झारखंड, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना बनाया गया। इस पत्र का मुख्य विषय बिहार राज्य में इस विभाजन नीति के नवगठित क्षेत्र के आर्थिक परिणामों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। हम आगे देखते हैं कि प्रशासनिक इकाइयों और शासन संरचना के पृथक्करण के परिणामस्वरूप आय अभिसरण पैटर्न ने कैसे अलग-अलग आकार लिया है।

इस शोध पत्र में मैंने बिहार और झारखंड के अलग होने की घटना का उपयोग आर्थिक परिणामों पर विभाजन नीति के प्रभाव की पहचान करने के लिए एक प्राकृतिक प्रयोग सेटिंग के रूप में करते हैं, जो रात के उजाले के आंकड़ों द्वारा प्रदर्शित होता है। हमने अंतर-में-अंतर दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए विश्लेषण किया और विश्लेषण किया कि झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में बिहार की तुलना में रात्रि प्रकाश तीव्रता में वार्षिक वृद्धि किस प्रकार भिन्न रही। फिर हम बिहार, झारखंड और दोनों राज्यों में विभाजन से पहले और बाद में उपजिला स्तर के अभिसरण पैटर्न को देखते हैं ताकि यह पता लगाया जा सके कि इसमें कोई संरचनात्मक बदलाव हुआ है या नहीं। हमने पाया कि झारखंड के सीमावर्ती क्षेत्रों में रात्रि प्रकाश तीव्रता की वृद्धि दर बिहार के सीमावर्ती क्षेत्रों की तुलना में लगभग 22% अधिक थी। यह दर्शाता है कि विभाजन की नीति का आर्थिक विकास पर प्रभाव पड़ा। उपजिला स्तर पर अभिसरण पर, हम पाते हैं कि बिहार और झारखंड के भीतर और विभाजन के बाद पूरे क्षेत्र में अभिसरण पैटर्न मजबूत हुआ।

साहित्यिक समीक्षा, आज भी अनेक लेखक डॉ. गिरीश बहल (पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया बिजनेस स्कूल विश्वविद्यालय), प्रो. सौदामिनी दास (आर्थिक विकास संस्थान), प्रो. विक्रम दयाल (आर्थिक विकास संस्थान), डॉ. ओइंद्रिला डे (आर्थिक विकास संस्थान) और डॉ. नरेश कुमार (आर्थिक विकास संस्थान) को उनके मार्गदर्शन और टिप्पणियों के लिए धन्यवाद देना चाहते हैं। अभिसरण की अवधारणा विकास अर्थशास्त्र के लिए केंद्रीय रही है, विशेष रूप से यह समझने में कि क्या गरीब अर्थव्यवस्थाएँ समय के साथ अमीर लोगों के साथ तालमेल बिठाती हैं।

सोलो (2014) अभिसरण सिद्धांत की नींव के नवशास्त्रीय विकास मॉडल पर आधारित है, जो बीटा-अभिसरण की भविष्यवाणी करता है, जहाँ गरीब अर्थव्यवस्थाएँ पूंजी पर घटते रिटर्न के कारण अमीर लोगों की तुलना में तेजी से बढ़ती हैं। यदि सभी अर्थव्यवस्थाएँ समान संरचनात्मक विशेषताओं को साझा करती हैं, जैसे बचत दर, जनसंख्या वृद्धि और प्रौद्योगिकी तो उन्हें पूर्ण अभिसरण का अनुभव करना चाहिए, समान स्थिर-अवस्था आय तक पहुँचना चाहिए। अमीर क्षेत्रों की तुलना में उच्च विकास दर का अनुभव करते हैं, जिससे समय के साथ आय अभिसरण होता है। यदि समीकरण को अतिरिक्त नियंत्रण चर के साथ अनुमानित किया जाता है, तो यह सशर्त बीटा अभिसरण का प्रतिनिधित्व करता है, जो क्षेत्रों में संरचनात्मक अंतरों को ध्यान में रखता है।

साला-आई-मार्टिन (2015) द्वारा किए गए अनुभवजन्य अध्ययनों से पता चला कि अभिसरण अक्सर सशर्त होता है, जिसका अर्थ है कि देश या क्षेत्र संरचनात्मक अंतरों, जैसे शिक्षा, बुनियादी ढाँचे और संस्थानों के आधार पर अपने स्वयं के स्थिर स्तर पर अभिसरित होते हैं। आगे के अनुभवजन्य कार्यों ने मानव पूंजी को शामिल करके सोलो मॉडल को आगे बढ़ाया।

वेइल (2018) ने प्रदर्शित किया कि मानव पूंजी को शामिल करने से मॉडल की व्याख्यात्मक शक्ति में सुधार होता है, यह दर्शाता है कि उच्च शिक्षा स्तर वाली अर्थव्यवस्थाएँ अधिक तेजी से अभिसरित होती हैं।

लुकास (2020) द्वारा अंतर्जात विकास मॉडल ने ज्ञान स्पिलओवर और मानव पूंजी संचय को पेश करके कम रिटर्न की धारणा को चुनौती दी। ये मॉडल सुझाव देते हैं कि नवाचार और शिक्षा में अधिक निवेश करने वाली अर्थव्यवस्थाएँ दीर्घकालिक विकास लाभ को बनाए रख सकती हैं, जो संभावित रूप से अभिसरण के बजाय विचलन की ओर ले जाती हैं। बाद के अध्ययनों ने संस्थानों की भूमिका पर जोर दिया।

रॉबिन्सन (2021) ने पाया कि समावेशी संस्थाएँ सतत विकास को बढ़ावा देती हैं, जबकि शोषक संस्थाएँ अभिसरण में बाधा डालती हैं। ने कई अभिसरण क्लबों के लिए साक्ष्य प्रदान किए, जहाँ समान संरचनात्मक विशेषताओं वाली अर्थव्यवस्थाएँ आपस में अभिसरित होती हैं।

विषय का महत्व, बिहार के विभाजन पर इस शोध पत्र में व्यापक अभिसरण साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान देता है, यह जांच करके कि राजनीतिक और प्रशासनिक पुनर्गठन क्षेत्रीय आय गतिशीलता को कैसे प्रभावित करता है। भारत में राज्य-स्तरीय अभिसरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है, 2000 में बिहार का बिहार और झारखंड में विभाजन एक अनूठा प्राकृतिक प्रयोग प्रदान दिखता है, जिससे यह आकलन किया जा सकता है कि क्या बेहतर शासन, स्थानीय नीति फोकस और अधिक कुशल संसाधन आवंटन के कारण छोटी प्रशासनिक इकाइयाँ तेजी से आर्थिक अभिसरण का अनुभव करती हैं। झारखंड में सीमावर्ती उपजिलों को उपचार समूह और बिहार में नियंत्रण समूह के रूप में लेकर अंतर-में-अंतर ढाँचे को नियोजित करके, यह शोधपत्र में पाया गया है कि क्या नव निर्मित राज्य ने अपने विभाजन-पूर्व प्रवृत्ति के सापेक्ष आय वृद्धि में तेज अभिसरण प्रदर्शित किया है।

भारत की आर्थिक जनगणना भारत की आर्थिक जनगणना एक व्यापक डेटासेट है जो देश भर में गैर-कृषि आर्थिक गतिविधियों की संरचना और वितरण पर विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। इसमें औपचारिक और अनौपचारिक दोनों उद्यमों सहित उत्पादन और सेवाओं में लगे सभी प्रतिष्ठान शामिल हैं। जनगणना में रोजगार, स्वामित्व प्रकार, क्षेत्रीय संरचना, स्थान और आर्थिक गतिविधि वर्गीकरण जैसे चरों पर डेटा एकत्र किया जाता है। परिणामों को और पुष्ट करने के लिए भारत की तीसरी से छठी आर्थिक जनगणना के डेटा का उपयोग किया जाता है। इस जनगणना का चौथा दौर 2011 में हुआ था, जो बिहार के विभाजन से ग्यारह साल पहले हुआ था, और पाँचवाँ दौर 2023 में हुआ था, जो विभाजन के 23 साल बाद हुआ था। इससे हमें आर्थिक परिणामों पर विभाजन नीति के प्रभाव का विश्लेषण करने में मदद मिलती है, जिसे क्षेत्र में कुल गैर-कृषि रोजगार में वृद्धि के रूप में मापा जाता है।

गैर-कृषि रोजगार पर प्रभाव अब तक, हमने आर्थिक गतिविधि के लिए एक प्रॉक्सी के रूप में रात की रोशनी के आंकड़ों का उपयोग किया है। इस दृष्टिकोण के लाभ के साथ कि यह हमें एक सुसंगत वार्षिक माप प्रदान करता है, इसमें कुछ कमियाँ भी हैं। रात की रोशनी गैर-आर्थिक गतिविधियों को दर्शा सकती है, जैसे सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था या ऊर्जा-गहन बुनियादी ढाँचा। यह भी हो सकता है कि विभाजन के बाद झारखंड में विद्युतीकरण अभियान चला और इससे नतीजे भ्रमित हो सकते हैं। चूंकि हमारे पास SHRID स्तर पर विद्युतीकरण का डेटा नहीं है, इसलिए हम इसे सीधे नियंत्रित नहीं कर सकते। यह सुनिश्चित करने के लिए कि राज्य विभाजन नीति का आर्थिक प्रभाव पड़ता है, हम आर्थिक गतिविधि का एक अधिक प्रत्यक्ष और संबंधित उपाय उपयोग करते हैं— भारत की आर्थिक जनगणना 1990 से 2013 तक गैर-कृषि रोजगार में वृद्धि। हम 1990–1998 और 2005–2013 के बीच सीमावर्ती क्षेत्रों में गैर-कृषि रोजगार की वृद्धि दर की गणना करते हैं। फिर हम मानक डिफ-इन-डिफ ढाँचे का उपयोग यह जांचने के लिए करते हैं कि क्या विभाजन के बाद की वृद्धि दर झारखंड सीमावर्ती क्षेत्रों की तुलना में झारखंड सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए काफी भिन्न थी।

केंद्र सरकार ने 51 योजनाओं के लिए दिए 2638.17 करोड़, इन कामों पर होंगे खर्च ...

PM मोदी ने विशेष सहायता योजना 2024–25 के तहत बिहार को 2638.17 करोड़ रुपये स्वीकृत किए। उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने इस सहायता के लिए धन्यवाद देते हुए कहा कि इससे सिंचाई, पथ निर्माण और भवन निर्माण की कई योजनाओं को गति मिलेगी।



उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने पूंजी निवेश के लिए राज्यों को विशेष सहायता योजना 2024–25 के तहत बिहार को 2638.17 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया है। उन्होंने कहा कि यह विशेष सहायता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के आग्रह पर प्राप्त हुई है, जिससे विकास योजनाओं को लागू करने में तेजी आएगी। सम्राट चौधरी ने कहा कि सिंचाई विभाग की 35 विभिन्न योजनाओं में हेतु 2340.61 करोड़ रुपये की विशेष सहायता की मांग की गई थी, जिसमें अधिकांश राशि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिए थी। उन्होंने कहा कि प्राप्त राशि से कोसी मेची अंतर-राज्यीय लिंक परियोजना, पश्चिमी कोसी नहर परियोजना, सुल्तानगंज में अजगैबीनाथ मंदिर में गंगा नदी के दाहिने किनारे पर पुराने उत्तरवाहिनी धार में सीधी घाट और चैनल का निर्माण होगा। चौधरी ने बताया कि पथ निर्माण विभाग की 14 विभिन्न योजनाओं हेतु 237.46 करोड़, भवन निर्माण विभाग के एसडीआरएफ बिहटा (पटना) के निर्माण एवं बिहार के 17 जिलों में आपातकालीन रिस्पांस सुविधा सह प्रशिक्षण केन्द्र के निर्माण हेतु 187.93 करोड़ की मांग की गई। कहा कि राज्य सरकार ने तीन महत्वपूर्ण विभागों की विभिन्न योजनाओं के लिए कुल 2766 करोड़ की विशेष सहायता मांगी थी, जिसे लगभग पूरी तरह स्वीकार करते हुए केन्द्र सरकार ने 2638.17 करोड़ रुपये की मंजूरी दी है।

Budget 2025: केंद्रीय बजट में झारखंड को क्या-क्या मिला? चमक जाएगी प्रदेश की किस्मत, 3 वर्गों को होगा ज्यादा फायदा केंद्रीय बजट 2025 में झारखंड के लिए कोई अलग घोषणा नहीं की गई है लेकिन इसके प्रावधानों से राज्य को लाभ होगा। कुपोषण से मुक्ति के लिए आंगनबाड़ी और पोषण 2.0 कार्यक्रम को बढ़ावा दिया जाएगा। जिला अस्पतालों में कैंसर रोगियों के लिए डे केयर सेंटर खुलेंगे। मेडिकल कॉलेजों में 10 हजार सीटें बढ़ेंगी। पर्यटन स्थलों को विकसित किया जाएगा और गिग वर्कर्स को आयुष्मान भारत योजना का लाभ मिलेगा।

1. झारखंड के मेडिकल कालेजों में भी बढ़ सकती हैं सीटें
2. अस्पतालों में कैंसर रोगियों के लिए खुल सकते हैं डे केयर सेंटर

राज्य ब्यूरो, रांची। बजट में झारखंड को भी कई सौगात मिली है। माना जा रहा है की महिलाओं और बच्चों इसका अधिक लाभ मिल सकता है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा लोकसभा में पेश किए गए केंद्रीय बजट में भले ही झारखंड के लिए अलग से कोई घोषणा न हो, लेकिन इसमें जो प्रविधान किए गए हैं, उनका लाभ झारखंड को भी मिलेगा। खासकर नौनिहालों, महिलाओं, आदिवासी समुदाय इनसे विशेष लाभान्वित होंगे। झारखंड को कुपोषण से मुक्ति मिलेगी, क्योंकि इससे निपटने के लिए बजट में सक्षम आंगनबाड़ी और पोषण 2.0 कार्यक्रम के तहत पौष्टिकता सहायता के लागत मानकों में वृद्धि करने का प्रस्ताव किया गया है। एनीमिया की समस्या से जूझनेवाली महिलाओं को भी इससे लाभ मिलेगा।

इस कार्यक्रम की घोषणा का झारखंड के लिए महत्व को इससे समझा जा सकता है कि राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5) की रिपोर्ट के अनुसार, झारखंड में 39.4 प्रतिशत बच्चे (पांच वर्ष तक के) आयु के अनुसार कम वजन के होते हैं। इस आयु वर्ग के 22.4 प्रतिशत बच्चे अपनी आयु के अनुसार लंबाई में नाटे हैं। यह एक तरह की कुपोषण की ही स्थिति है। लगभग नौ प्रतिशत बच्चे गंभीर रूप से कुपोषण से ग्रसित हैं, जिनका उपचार आवश्यक है। कुपोषण की अधिक समस्या ग्रामीण क्षेत्रों में है। केंद्रीय बजट में जिला अस्पतालों में कैंसर रोगियों के लिए डे केयर सेंटर की स्थापना की घोषणा की है। वर्ष 2025 में इसके लिए 200 जिला अस्पतालों का चयन किया जाना है। निश्चित रूप से झारखंड के भी जिला अस्पताल इस सूची में सम्मिलित होंगे। केंद्रीय मंत्री ने मेडिकल कॉलेजों में चरणबद्ध ढंग से 10 हजार सीटें बढ़ाने की भी घोषणा की है। झारखंड के सात मेडिकल कॉलेजों को इसका लाभ मिल सकता है। इससे चिकित्सकों की कमी भी दूर होगी।

पर्यटन का होगा विकास, झारखंड के गिग वर्कर्स होंगे लाभान्वित केंद्रीय बजट में 50 पर्यटन स्थलों को राज्यों के सहयोग से पीपीपी मोड पर विकसित करने की बात कही गई है। इससे झारखंड के भी एक-दो पर्यटन स्थल स्थान पा सकते हैं। होम स्टे के लिए लोन और चिकित्सा पर्यटन का भी लाभ झारखंड को मिल सकता है। बजट में गिग वर्कर्स को आयुष्मान भारत योजना का लाभ देने की घोषणा की है। इसका लाभ झारखंड के गिग वर्कर्स को मिल सकता है। राज्य सरकार ने भी इनकी सामाजिक सुरक्षा के लिए कानून लागू करने का निर्णय लिया है।

निष्कर्ष, इस शोध पत्र में आर्थिक गतिविधि के लिए प्रॉक्सी के रूप में विकास का उपयोग करते हुए बिहार के विभाजन के आर्थिक विकास पर प्रभावों का अध्ययन किया गया है। इसके अंतर-में-अंतर ढांचे का उपयोग करते हुए, मैने पाया हैं कि विभाजन के बाद, झारखंड के सीमावर्ती SHRID ने बिहार की तुलना में विकास में लगभग 22% अधिक वृद्धि का अनुभव किया। यह भी देखा गया है कि प्रशासनिक पुनर्गठन और स्थानीय शासन ने नवगठित राज्य में आर्थिक गतिविधि को तेज करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पूर्व-प्रवृत्तियों की अनुपस्थिति इस तर्क का और समर्थन करती है कि विचलन अंतर्निहित आर्थिक अंतरों के बजाय विभाजन द्वारा ही प्रेरित है। विभाजन के परिणामस्वरूप केंद्र सरकार द्वारा राज्यों को वित्तीय हस्तांतरण में परिवर्तन के संभावित भ्रामक प्रभावों के बारे में चिंताएं हुई थी परन्तु 11 साल से सत्ता में NDA की सरकार ने कोई खास प्रयास इन दोनों ही राज्यों के लिए नहीं किए हैं। यदि केन्द्र की सरकार सकारात्मक होती तो इन दोनों ही राज्यों का विकास तीब्रता से हो सकता था। आज भी कम विकसित क्षेत्र के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए

बिहार की कीमत पर झारखंड क्षेत्र में जानबूझकर धन भेजा जा रहा है। लेकिन यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि झारखंड की ओर वित्तीय प्रवाह में किसी भी तरह की अचानक वृद्धि लंबे समय तक कायम नहीं रह सकती है और हमने कार्यान्वयन के 24 साल बाद तक विभाजन नीति के प्रभाव का अनुमान लगाया है। हालांकि, इस पर आगे की जांच भविष्य के नीति अनुसंधान का दायरा हो सकती है। जब एक नया राज्य बनता है, तो उसे एक नया प्रशासनिक और संस्थागत सेटअप मिलता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि नए राज्य की नीति व्यवस्था भी विभाजन के परिणामस्वरूप बदल जाती है जो आर्थिक परिणामों को प्रभावित करती है। बिहार और झारखंड का अनुभव अन्य क्षेत्रों के लिए मूल्यवान सबक प्रदान करता है जो राज्य पुनर्गठन को आर्थिक विकास के लिए एक उपकरण के रूप में मानते हैं। इस शोध पत्र के निष्कर्ष क्षेत्रीय आर्थिक प्रक्षेप पथ को आकार देने में नीति की भूमिका स्थापित करके अभिसरण पर व्यापक साहित्य में वृद्धि करते हैं। इन परिणामों से महत्वपूर्ण नीतिगत निहितार्थ को आय अभिसरण और इस प्रकार आय असमानताओं को प्रभावित करने की नीतियों की क्षमता के रूप में लिया जा सकता है। कुल मिलाकर, यह अध्ययन इस बात को समझने में योगदान देता है कि राजनीतिक और प्रशासनिक परिवर्तन क्षेत्रीय आर्थिक परिणामों को कैसे आकार देते हैं। एक बाहरी नीतिगत झटके के प्रभाव को अलग करके, हम आर्थिक विकास और अभिसरण को प्रभावित करने में शासन संरचनाओं की भूमिका पर अनुभवजन्य साक्ष्य प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एसमोग्लू, डी., जॉनसन, एस., और रॉबिन्सन, जे. ए. (2001) तुलनात्मक विकास की औपनिवेशिक उत्पत्ति एक अनुभवजन्य जांच अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 91(5), पृष्ठ 1369
2. एसमोग्लू, डी., जॉनसन, एस., और रॉबिन्सन, जे. ए. (2005) दीर्घकालिक विकास के मूलभूत कारण के रूप में संस्थान आर्थिक विकास की पुस्तिका, 1, पृष्ठ 472
3. अहलूवालिया, एम.एस. (2000). सुधारों के बाद की अवधि में राज्यों का आर्थिक प्रदर्शन. आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, 35(19), पृष्ठ 1648
4. आशेर, एस., लंट, टी., मत्सुरा, आर., नोवोसाद, पी. (2021). उच्च भौगोलिक संकल्प पर विकास अनुसंधान SHRUG ओपन डेटा प्लेटफॉर्म का उपयोग करके भारत में नाइट-लाइट्स, फर्म और गरीबी का विश्लेषण. विश्व बैंक आर्थिक समीक्षा, 35(4). ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस. पृष्ठ 34
5. बैरो, आर.जे., और साला-ए-मार्टिन, एक्स. (1992). अभिसरण. जर्नल ऑफ पॉलिटिकल इकोनॉमी, 100 (2) पृष्ठ 223
6. बैरो, आर. जे., और साला-ए-मार्टिन, एक्स. (1995) आर्थिक विकास पृष्ठ 56
7. कैशिन, पी., और सहाय, आर. (1996) भारत के राज्यों में आंतरिक प्रवास, केंद्र-राज्य अनुदान और आर्थिक विकास आईएमएफ स्टाफ पेपर्स, 43(1), पृष्ठ 171

- 8 डर्लोफ, एस. एन., और जॉनसन, पी. ए. (1995) कई व्यवस्थाएँ और क्रॉस-कंट्री विकास व्यवहार। जर्नल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमेट्रिक्स, 10(4), पृष्ठ 384
- 9 एट्टुर, सी., और कोच, डब्ल्यू. (2007) विकास, तकनीकी अंतरनिर्भरता और स्थानिक बाह्यताएँ सिद्धांत और साक्ष्य जर्नल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमेट्रिक्स, (6), पृष्ठ 1033